यूपीएससी के लिए भूगोल वैकल्पिक पाठ्यक्रम 2023-24

पेपर 1: भूगोल के सिद्धांत

पेपर 1 को भौतिक भूगोल और मानव भूगोल में विभाजित किया गया है।

भाग 1: भौतिक भूगोल:

यूपीएससी आईएएस भूगोल वैकल्पिक के पेपर 1 के भाग 1 में भौतिक भूगोल शामिल है जिसमें भू-आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान, समुद्र विज्ञान, जीवविज्ञान और पर्यावरण भूगोल शामिल हैं।

1. भू-आकृति विज्ञान:

भू-आकृति विज्ञान पृथ्वी की सतह पर (और कभी-कभी अन्य ग्रहों पर) भू-आकृतियों, उनकी प्रक्रियाओं, रूप और तलछट का अध्ययन है। अध्ययन में परिदृश्यों को देखना शामिल है ताकि यह पता लगाया जा सके कि पृथ्वी की सतह की प्रक्रियाएँ, जैसे हवा, पानी और बर्फ, परिदृश्य को कैसे आकार दे सकती हैं। इस पाठ्यक्रम में निम्नलिखित उपविषय शामिल हैं

1. भू-आकृति विकास को नियंत्रित करने वाले कारक;
2. अंतर्जात और बहिर्जात बल;
3. पृथ्वी की पपड़ी की उत्पत्ति और विकास;
4. भू-चुंबकत्व के मूल सिद्धांत;
5. पृथ्वी के आंतरिक भाग की भौतिक स्थितियाँ;
6. जियोसिंक्लिंस;
7. महाद्वीपीय बहाव;
8. समस्थितिकी;
9. थाली की वस्तुकला;
10. पर्वत निर्माण पर हाल के विचार;
11. ज्वालामुखीयता;
12. भूकंप और सुनामी;
13. भू-आकृति चक्र और भूमि परिदृश्य विकास की अवधारणाएँ;
14. अनाच्छादन कालक्रम;
15. चौनल आकृति विज्ञान;
16. कटाव वाली सतहें;
17. ढलान विकास;
18. अनुप्रयुक्त भू-आकृति विज्ञान;
19. भू-आकृति विज्ञान, आर्थिक भूविज्ञान और पर्यावरण।

2. जलवायु विज्ञान:

जलवायु विज्ञान या जलवायु विज्ञान जलवायु का वैज्ञानिक अध्ययन है, जिसे वैज्ञानिक रूप से एक निश्चित अवधि में औसत मौसम की स्थिति के रूप में परिभाषित किया जाता है। निम्नलिखित उपविषय हैं:

1. विश्व की तापमान एवं दबाव पेटियाँ;
2. पृथ्वी का ताप बजट;
3. वायुमंडलीय परिसंचरण;
4. वायुमंडलीय स्थिरता और अस्थिरता.
5. ग्रहीय और स्थानीय हवाएँ;

6. मानसून और जेट स्ट्रीम;
7. वायुराशियाँ और मोर्चे;
8. शीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय चक्रवात;
9. वर्षा के प्रकार और वितरण;
10. मौसम और जलवायु;
11. कोपेन के थॉर्नथवेट और ट्रेवार्था का विश्व जलवायु का वर्गीकरण;
12. जल विज्ञान चक्र;
13. वैश्विक जलवायु परिवर्तन, और जलवायु परिवर्तन में मनुष्य की भूमिका और प्रतिक्रिया
14. अनुप्रयुक्त जलवायु विज्ञान और
15. शहरी जलवायु.

3. समुद्रशास्त्र:

समुद्र विज्ञान एक विज्ञान है जो महासागरों से संबंधित है और इसमें उनकी सीमा और गहराई का परिसीमन, उनके जल की भौतिकी और रसायन विज्ञान, समुद्री जीव विज्ञान और उनके संसाधनों का दोहन शामिल है। इसमें शामिल है

1. अटलांटिक, भारतीय और प्रशांत महासागरों की निचली स्थलाकृति;
2. महासागरों का तापमान और लवणता;
3. गर्मी और नमक का बजट,
4. महासागरीय निक्षेप;
5. लहरें, धाराएँ और ज्वार;
6. समुद्री संसाधन;
7. जैविक, खनिज और ऊर्जा संसाधन;
8. मूंगा चट्टानें मूंगा विरंजन;
9. समुद्र-स्तर में परिवर्तन;
10. समुद्र का कानून और
11. समुद्री प्रदूषण।

4.जीवनी:

बायोग्राफी भौगोलिक स्थान और भूवैज्ञानिक समय के माध्यम से प्रजातियों और पारिस्थितिक तंत्र के वितरण का अध्ययन है। इसमें शामिल है

1. मिट्टी की उत्पत्ति;
2. मिट्टी का वर्गीकरण और वितरण;
3. मिट्टी का प्रकार;
4. मिट्टी का कटाव,
5. ह्रास एवं संरक्षण;
6. पौधों और जानवरों के विश्व वितरण को प्रभावित करने वाले कारक;
7. वनों की कटाई की समस्याएँ और संरक्षण उपाय;
8. सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी;
9. वन्य जीवन;

10. प्रमुख जीन पूल केंद्र।
11. पर्यावरण भूगोल:

पर्यावरण भूगोल भूगोल की वह शाखा है जो मनुष्यों और प्राकृतिक दुनिया के बीच बातचीत के स्थानिक पहलुओं का वर्णन करती है। इसमें शामिल है:

1. सिद्धांत पारिस्थितिकी;
2. मानव पारिस्थितिक अनुकूलन;
3. पारिस्थितिकी और पर्यावरण पर मनुष्य का प्रभाव;
4. वैश्विक और क्षेत्रीय पारिस्थितिक परिवर्तन और असंतुलन;
5. पारिस्थितिकी तंत्र उनका प्रबंधन और संरक्षण;
6. पर्यावरणीय क्षरण, प्रबंधन और संरक्षण;
7. जैव विविधता और सतत विकास;
8. पर्यावरण नीति;
9. पर्यावरणीय खतरे और उपचारात्मक उपाय;
10. पर्यावरण शिक्षा और कानून.

भाग 2: मानव भूगोल

1.मानव भूगोल में परिप्रेक्ष्य:

1. क्षेत्रीय भेदभाव;
2. क्षेत्रीय संश्लेषण;
3. द्वैतवाद और द्वैतवाद;
4. पर्यावरणवाद;
5. मात्रात्मक क्रांति और स्थानिक विश्लेषण;
6. कट्टरपंथी, व्यवहारिक, मानवीय और कल्याणकारी दृष्टिकोण;
7. भाषाएँ, धर्म और धर्मनिरपेक्षता;
8. विश्व के सांस्कृतिक क्षेत्र;
9. मानव विकास सूचकांक।

2.आर्थिक भूगोल:

1. विश्व आर्थिक विकास: माप और समस्याएँ;
2. विश्व संसाधन और उनका वितरण;
3. ऊर्जा संकट;
4. विकास की सीमाएँ;
5. विश्व कृषि: कृषि क्षेत्रों की टाइपोलॉजी;
6. कृषि आदान एवं उत्पादकता;
7. भोजन और पोषण संबंधी समस्याएं;
8. खाद्य सुरक्षा;
9. अकाल: कारण, प्रभाव और उपचार;

10. विश्व उद्योगः स्थान पैटर्न और समस्याएं;
11. विश्व व्यापार के पैटर्न.

3.जनसंख्या और बस्ती भूगोलः

1. विश्व जनसंख्या की वृद्धि और वितरण;
2. जनसांख्यिकीय विशेषताएँ;
3. प्रवासन के कारण एवं परिणाम;
4. अधिक-से-कम और इष्टतम जनसंख्या की अवधारणाएँ;
5. जनसंख्या सिद्धांत, विश्व जनसंख्या समस्याएं और नीतियां, सामाजिक कल्याण और जीवन की गुणवत्ता;
6. सामाजिक पूंजी के रूप में जनसंख्या।
7. ग्रामीण बस्तियों के प्रकार और पैटर्न;
8. ग्रामीण बस्तियों में पर्यावरण संबंधी मुद्दे;
9. शहरी बस्तियों का पदानुक्रम;
10. शहरी आकारिकी;
11. प्राइमेट शहर की अवधारणा और रैंक-आकार नियम;
12. कस्बों का कार्यात्मक वर्गीकरण;
13. शहरी प्रभाव का क्षेत्र;
14. ग्रामीण-शहरी सीमा;
15. सैटेलाइट शहर;
16. शहरीकरण की समस्याएँ एवं उपाय;
17. शहरों का सतत विकास.

4.स्थानीय योजनाः

1. एक क्षेत्र की अवधारणा;
2. क्षेत्रों के प्रकार और क्षेत्रीयकरण के तरीके;
3. विकास केंद्र और विकास ध्रुव;
4. क्षेत्रीय असंतुलन;
5. क्षेत्रीय विकास रणनीतियाँ;
6. क्षेत्रीय योजना में पर्यावरणीय मुद्दे;
7. सतत विकास के लिए योजना बनाना.

5. मानव भूगोल में मॉडल, सिद्धांत और कानूनः

1. मानव भूगोल में प्रणाली विश्लेषण;
2. माल्थसियन, मार्क्सवादी और जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल;
3. क्रिस्टेलर और लॉश के केंद्रीय स्थान सिद्धांत;
4. पेरौक्स और बौडेविल;
5. वॉन थुनेन का कृषि स्थान का मॉडल;
6. वेबर का औद्योगिक स्थान का मॉडल;

7. विकास के चरणों का रोस्तोव मॉडल।
8. हृदय-भूमि और रिमलैंड सिद्धांत;
9. अंतरराष्ट्रीय सीमाओं और सीमाओं के कानून.

पेपर 2: भारत का भूगोल

1. शारीरिक सेटिंग:

1. पड़ोसी देशों के साथ भारत का अंतरिक्ष संबंध;
2. संरचना और राहत;
3. जल निकासी प्रणाली और जलसंभर;
4. भौगोलिक क्षेत्र;
5. भारतीय मानसून का तंत्र और वर्षा पैटर्न;
6. उष्णकटिबंधीय चक्रवात और पश्चिमी विक्षोभ;
7. बाढ़ और सूखा;
8. जलवायु क्षेत्र;
9. प्राकृतिक वनस्पति,
10. मिट्टी के प्रकार और उनका वितरण.

2. संसाधन:

1. भूमि, सतही और भूजल, ऊर्जा, खनिज, जैविक और समुद्री संसाधन, वन और वन्य जीवन संसाधन और उनका संरक्षण;
2. ऊर्जा संकट।

3. कृषि:

1. बुनियादी ढाँचा: सिंचाई, बीज, उर्वरक, बिजली;
2. संस्थागत कारक; भूमि जोत, भूमि स्वामित्व और भूमि सुधार;
3. फसल पैटर्न, कृषि उत्पादकता, कृषि सघनता, फसल संयोजन, भूमि क्षमता;
4. कृषि एवं सामाजिक वानिकी;
5. हरित क्रांति और इसके सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिक निहितार्थ;
6. शुष्क खेती का महत्व;
7. पशुधन संसाधन और श्वेत क्रांति;
8. एक्वा-संस्कृति;
9. रेशम उत्पादन, कृषि और मुर्गीपालन;
10. कृषि क्षेत्रीयकरण;
11. कृषि-जलवायु क्षेत्र;
12. कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्र।

4. उद्योग:

1. उद्योगों का विकास;
2. कपास, जूट, कपड़ा, लोहा और इस्पात, एल्यूमीनियम, उर्वरक, कागज, रसायन और दवा, ऑटोमोबाइल, कुटीर और कृषि-आधारित उद्योगों के स्थानीय कारक;

3. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों सहित औद्योगिक घराने और परिसर;
4. औद्योगिक क्षेत्रीयकरण;
5. नई औद्योगिक नीति;
6. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और उदारीकरण;
7. विशेष आर्थिक क्षेत्र;
8. पारिस्थितिक पर्यटन सहित पर्यटन।

5. परिवहन, संचार और व्यापार:

1. सड़क, रेलवे, जलमार्ग, वायुमार्ग और पाइपलाइन नेटवर्क और क्षेत्रीय विकास में उनकी पूरक भूमिकाएँ;
2. राष्ट्रीय और विदेशी व्यापार पर बंदरगाहों का बढ़ता महत्व;
3. व्यापार का संतुलन;
4. व्यापार नीती;
5. निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र;
6. संचार और सूचना प्रौद्योगिकी में विकास और अर्थव्यवस्था और समाज पर उनके प्रभाव;
7. भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम.

6. सांस्कृतिक सेटिंग:

1. भारतीय समाज का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य;
2. नस्लीय भाषाई और जातीय विविधताएँ;
3. धार्मिक अल्पसंख्यक;
4. प्रमुख जनजातियाँ, जनजातीय क्षेत्र एवं उनकी समस्याएँ;
5. सांस्कृतिक क्षेत्र;
6. जनसंख्या की वृद्धि, वितरण और घनत्व;
7. जनसांख्यिकीय विशेषताएँ: लिंग-अनुपात, आयु संरचना, साक्षरता दर, कार्य-बल, निर्भरता अनुपात, दीर्घायु;
8. प्रवासन (अंतर-क्षेत्रीय, अंतर-क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय) और संबंधित समस्याएं;
9. जनसंख्या समस्याएँ और नीतियाँ;
10. स्वास्थ्य संकेतक.

7. बस्तियाँ:

1. ग्रामीण बस्तियों के प्रकार, पैटर्न और आकारिकी;
2. शहरी विकास;
3. भारतीय शहरों की आकृति विज्ञान;
4. भारतीय शहरों का कार्यात्मक वर्गीकरण;
5. उपनगर और महानगरीय क्षेत्र;
6. शहरी फैलाव;
7. मलिन बस्तियाँ और उनसे जुड़ी समस्याएँ;
8. नगर नियोजन;
9. शहरीकरण की समस्याएँ एवं उपाय.

8. क्षेत्रीय विकास और योजनाः

1. भारत में क्षेत्रीय योजना का अनुभव;
2. पंचवर्षीय योजनाएँ;
3. एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम;
4. पंचायती राज और विकेन्द्रीकृत योजना;
5. कमान क्षेत्र विकास;
6. जल विभाजन प्रबंधन;
7. पिछड़े क्षेत्र, रेगिस्तान, सूखाग्रस्त, पहाड़ी आदिवासी क्षेत्र के विकास के लिए योजना बनाना;
8. बहुस्तरीय योजना;
9. द्वीप क्षेत्रों की क्षेत्रीय योजना और विकास।

9. राजनीतिक पहलूः

1. भारतीय संघवाद का भौगोलिक आधार;
2. राज्य पुनर्गठन;
3. नये राज्यों का उदय;
4. क्षेत्रीय चेतना और अंतरराज्यीय मुद्दे;
5. भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमा और संबंधित मुद्दे;
6. सीमा पार आतंकवाद;
7. विश्व मामलों में भारत की भूमिका;
8. दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र की भूराजनीति।

10. समकालीन मुद्दोंः

1. पारिस्थितिक मुद्देः पर्यावरणीय खतरेः भूस्खलन, भूकंप, सुनामी, बाढ़ और सूखा, महामारी;
2. पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित मुद्दे;
3. भूमि उपयोग के पैटर्न में परिवर्तन;
4. पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन और पर्यावरण प्रबंधन के सिद्धांत;
5. जनसंख्या विस्फोट और खाद्य सुरक्षा;
6. वातावरण संबंधी मान भंग;
7. वनों की कटाई, मरुस्थलीकरण और मिट्टी का कटाव;
8. कृषि एवं औद्योगिक अशांति की समस्याएँ;
9. आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असमानताएँ;
10. सतत वृद्धि और विकास की अवधारणा;
11. पर्यावरण के प्रति जागरूकता;
12. नदियों का जुड़ाव;
13. वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था.

टिप्पणीः अभ्यर्थियों को इस पेपर में शामिल विषयों से संबंधित एक अनिवार्य मानचित्र प्रश्न का उत्तर देना होगा।